

राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य रचनाओं की भूमिका

प्रो. छत्रसाल सिंह

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा,
उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

DOI: <https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i11.2>

सारांश : राष्ट्रीय शिक्षा, एक ऐसी शिक्षा है जो छात्र-छात्राओं में देश के प्रति प्रेम, निष्ठा, कर्तव्य-बोध, राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करे। केवल पुस्तकीय ज्ञान देने के बजाय, राष्ट्रीय शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो देश की प्रगति में सक्रिय भूमिका निभाएँ। राष्ट्रीय शिक्षा छात्र-छात्राओं को भारत के गौरवशाली इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम, महान व्यक्तित्वों, संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों से परिचित कराती है। इससे उनमें राष्ट्रीय गौरव और आत्मविश्वास की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीय शिक्षा में सत्य, अहिंसा, एकता, सहिष्णुता, सहयोग, त्याग और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों पर बल दिया जाता है। इन मूल्यों से छात्र-छात्राओं में सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व विकसित होता है। राष्ट्र कवि दिनकर जी के काव्य में अपने युग की पीड़ा का मार्मिक अंकन हुआ है। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति की पूर्ण झलक के साथ ही साथ सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का अलौकिक दृश्य भी परिलक्षित होता है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का व्यापक एवं दिव्य स्वरूप दिखाई पड़ता है। एक ओर उनकी कविता में हुंकार है तो दूसरी ओर शोषित पीड़ित उपेक्षित भारतीयों को जगाने के लिए वे क्रान्ति की मशाल लिए खड़े हैं। परशुराम की प्रतीक्षा में वे सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर को दर्शाते हुए उनके शौर्य एवं वीरोचित भाव को दिखाते हैं। दूसरी तरफ वे गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण मानवीय मूल्य की गौरवमयी गाथा को भी गाते हैं। उनकी कविता में जहां राष्ट्र जागरण जनजागरण की ज्वाला दिखाई देती है वहीं वे आम आदमी के साथ खड़े हो कदम से कदम मिला देश धर्म की मिट्टी के मूल्य चुकाने के लिए सदा तत्पर रहते हैं।

संकेत शब्द: सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय कवि, जनजागरण, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रहित, राष्ट्रीय मूल्य.

प्रस्तावना

स्वतंत्रता आंदोलन की भावना ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की मांग को जन्म दिया जो राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा दे, न कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शिक्षा को, जो भारतीय संस्कृति की उपेक्षा करती थी। इस राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में शिक्षा के बहिष्कार को देखा और शान्तिनिकेतन, गुरुकुल कांगड़ी और असहयोग आंदोलन के दौरान विभिन्न **विद्यापीठों** जैसे संस्थानों की स्थापना की, जिनका उद्देश्य भारतीय नियंत्रण में, स्वदेशी और देशभक्ति को बढ़ावा देने वाली शिक्षा प्रदान करना था। राष्ट्रीय शिक्षा का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र भाषा, धर्म, जाति, प्रांत या वर्ग के भेदभाव से ऊपर उठकर देश को एक परिवार के रूप में देखें। इससे राष्ट्र की अखंडता और एकता मजबूत होती है। राष्ट्रीय शिक्षा छात्र-छात्राओं को उनके संवैधानिक अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की भी समझ देती है— जैसे मतदान, राष्ट्रहित में कार्य, सामाजिक शांति बनाए रखना, तथा पर्यावरण संरक्षण। महात्मा गांधी के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा में श्रम, आत्मनिर्भरता और व्यावहारिक ज्ञान को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। इससे **विद्यार्थी** केवल नौकरी के लिए नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास के लिए सक्षम बनते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुसार विज्ञान, **प्रौद्योगिकी, उद्योग**, नवाचार और अनुसंधान पर भी बल देती है, ताकि देश वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ सके। **विद्यालयों** में वाद-विवाद, जनचर्चा, समूह गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से छात्र-छात्राओं में लोकतंत्र, सहिष्णुता और सामाजिक सद्भाव की भावना विकसित होती है। रामधारी सिंह दिनकर जी, जिन्हें केवल दिनकर जी के नाम से जाना जाता है, भारतीय साहित्य जगत की एक महान विभूति हैं, जिन्हें उनकी प्रभावशाली और भावपूर्ण कविताओं के लिए जाना जाता है। वे केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि एक स्वतंत्रता सेनानी, निबंधकार और शिक्षाविद भी थे, जिन्होंने भारत के साहित्यिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी रचनाएँ भारतीय जनता के संघर्षों और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं, जो उन्हें एक राष्ट्रीय कवि और विद्रोह की आवाज़ बनाती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा एवं राष्ट्र कवि दिनकर जी

राष्ट्रीय शिक्षा केवल **विद्यालयों** में पढ़ाए जाने वाले विषयों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जो छात्र-छात्राओं को आदर्श, जागरूक, जिम्मेदार और राष्ट्रभक्त नागरिक बनाती है। यह शिक्षा राष्ट्र की उन्नति, **समृद्धि** और सांस्कृतिक एकता की आधारशिला है।

राष्ट्र कवि दिनकर जी के काव्य में अपने युग की पीड़ा का मार्मिक अंकन हुआ है। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति की पूर्ण झलक के साथ ही साथ सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का अलौकिक दृश्य भी परिलक्षित होता है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का व्यापक एवं दिव्य स्वरूप दिखाई पड़ता है। एक ओर उनकी कविता में हुंकार है तो दूसरी ओर शोषित पीड़ित उपेक्षित भारतीयों को जगाने के लिए वे क्रान्ति की मशाल लिए खड़े हैं।

रामधारी सिंह दिनकर जी का व्यक्तिगत परिचय

रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के बेगूसराय ज़िले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उनका परिवार आर्थिक रूप से कमज़ोर था और उन्हें कई आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके पिता बाबू रवि सिंह का निधन दिनकर जी के बचपन में ही हो गया था, जिससे परिवार आर्थिक तंगी में आ गया। इन चुनौतियों के बावजूद, दिनकर जी की माँ मनरूप देवी ने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें अच्छी शिक्षा मिले। उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षों से भरा रहा, जिसकी अभिव्यक्ति बाद में उनकी कविताओं में हुई, जिनमें

लचीलापन और सामाजिक न्याय के विषय झलकते हैं। दिनकर जी ने श्याम सुंदरी देवी से विवाह किया और उनके तीन पुत्र और एक पुत्री हुई। उनके परिवार ने उन्हें उनकी साहित्यिक और राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक सहयोग और स्थिरता प्रदान की।

व्यक्तिगत विश्वास और दर्शन

दिनकर जी की व्यक्तिगत मान्यताएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनके अनुभवों और विभिन्न साहित्यिक एवं दार्शनिक परंपराओं के संपर्क से गहराई से प्रभावित थीं। वे सामाजिक न्याय और समानता में दृढ़ विश्वास रखते थे, जो उनके लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो अक्सर उत्पीड़ितों की दुर्दशा को उजागर करते हैं और सामाजिक सुधारों का आह्वान करते हैं। उनकी कविताओं में वीरता और पराक्रम की भावना झलकती है, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित है। दिनकर जी सांस्कृतिक एकता और हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में बढ़ावा देने के भी समर्थक थे। दार्शनिक रूप से, वे महात्मा गांधी की शिक्षाओं के साथ-साथ रवींद्रनाथ टैगोर, जॉन कीट्स और जॉन मिल्टन की साहित्यिक कृतियों से भी प्रभावित थे। सामाजिक परिवर्तन के एक साधन के रूप में साहित्य की शक्ति में उनके विश्वास ने एक कवि और एक राजनेता दोनों के रूप में उनके करियर को आकार दिया। वे कविता को केवल एक कला के रूप में ही नहीं, बल्कि लोगों को एक साझा उद्देश्य के लिए प्रेरित और संगठित करने के एक साधन के रूप में देखते थे। व्यक्तिगत अनुभवों, साहित्यिक प्रभावों और राजनीतिक जुड़ाव के इस मिश्रण ने भारतीय साहित्य में दिनकर जी की अनूठी आवाज़ और विरासत को परिभाषित किया। भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के लिए शिक्षा आवश्यक थी क्योंकि इसने सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति और व्यक्तिगत नेतृत्व के स्रोत के रूप में कार्य किया। शिक्षा ने, अपने मूल में, भौगोलिक भेद और भाषाई बाधाओं को पार करते हुए, विभिन्न समूहों के बीच राष्ट्रीय जागरूकता और एकजुटता की भावना पैदा की। नैतिक और आचारक्षमता की शिक्षा की करने विकसित को मूल्यों संहिता-, जो एक सफल स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवश्यक थी, को महात्मा गांधी जैसे दूरदर्शी लोगों ने पहचाना, जिन्होंने जनता को संगठित करने में शिक्षा की शक्ति को पहचाना। गांधीजी ने इन मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया। विश्वविद्यालय और अन्य पारंपरिक शैक्षणिक संस्थान, जैसे स्कूल और महाविद्यालय, बौद्धिक संवाद और राजनीतिक कार्रवाई के केंद्र बन गए हैं। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे प्रभावशाली लोगों के लिए स्वतंत्र भारत के लिए अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त करना और ऐसा करने के लिए मंच प्रदान करके जन समर्थन जुटाना संभव बनाया। शिक्षा ने नागरिकों को आलोचनात्मक सोच की क्षमता भी प्रदान की, जिससे वे दमनकारी औपनिवेशिक कानूनों को चुनौती देने और अपने अधिकारों के लिए तर्क देने में सक्षम हुए। शिक्षा ने व्यक्तियों को अपने अधिकारों की वकालत करने में भी सक्षम बनाया। लंबे समय से हाशिए पर पड़ी महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की शक्ति मिली। सरोजिनी नायडू और एनी बेसेंट जैसी नेता न केवल स्वयं शिक्षित थीं, बल्कि उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की वकालत भी की और अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक थी क्योंकि इसने आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया, राष्ट्रीय पहचान की भावना विकसित करने में मदद की और नागरिकों को औपनिवेशिक सरकार के अधिकार का विरोध करने की क्षमता प्रदान की। स्वतंत्र भारत के बौद्धिक और नैतिक आधार को स्थापित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण, यह उस प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा थी जिसके माध्यम से राष्ट्र ने स्वतंत्रता के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम किया।

राष्ट्र कवि दिनकर जी और स्वाधीनता आंदोलन

राष्ट्र कवि दिनकर जी स्वाधीनता आंदोलन के पुरोधा थे। उनकी अधिकतर रचनाएँ राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को जन मन तक पहुँचाने वाली थी। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा अपने युग को प्रभावित किया। उनकी रचनाओं में स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीय सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चेतना को चेताने वाला था। वे गांधीवाद से अवश्य प्रभावित थे लेकिन परशुराम को विवेकानंद को अपना आदर्श पुरुष मानते थे। उनकी रचनाओं में हुंकार रश्मिरथी कुरुक्षेत्र परशुराम की प्रतिक्षा में देश प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना को चेताने वाला भाव परिलक्षित होता है। दिनकर जी ने इतिहास को ही साक्षी मानकर राम कृष्ण परशुराम को अपना आदर्श पुरुष माना। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्र धर्म को अपना मूल धर्म माना। वास्तव में उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना को चेताने वाली भारतीय संस्कृति एवं धर्म ध्वजा की पताका को जन मन में फहराने वाली थी। वे राष्ट्रवादी एवं जन मन के जनजागरण के कवि थे।

राष्ट्रीय मूल्य और चेतना

राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय मूल्य - दिनकर जी की रचनाओं में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी है। उन्होंने "रश्मिरथी" और "कुरुक्षेत्र" जैसी रचनाओं से राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित किया, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और बाद में भी प्रासंगिक रही।

सामाजिक न्याय और समानता- दिनकर जी ने अन्याय और शोषण के विरुद्ध अपनी लेखनी का इस्तेमाल किया। उन्होंने सामाजिक न्याय और समता की वकालत की और समाज में व्याप्त भेदभाव को दूर करने का प्रयास किया।

भारतीय संस्कृति का गौरव- उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत को प्रस्तुत किया और युवाओं को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

मानवतावाद और विश्वबंधुत्व- दिनकर जी ने केवल राष्ट्रवाद ही नहीं, बल्कि मानवतावादी दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया। उन्होंने विश्वबंधुत्व और शांति का संदेश दिया, जो भारत को एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सहायक रहा।

जागरूकता और प्रेरणा- दिनकर जी की कविताओं ने भारतीयों को जागरूक किया और उन्हें अपने देश के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने युवाओं में जोश और उत्साह भरा और उन्हें अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

सांस्कृतिक एकता और सहिष्णुता: उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों को एक साथ लाने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों को जाति और धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीय शिक्षा की भावना का विकास

रामधारी सिंह दिनकर जी की रचनाओं ने राष्ट्रीय मूल्य और राष्ट्रीय शिक्षा की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी कविताओं और गद्य के माध्यम से भारतीयों के दिलों में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को जगाया और उन्हें एक ऐसे भारत के निर्माण के लिए प्रेरित किया जो अपनी संस्कृति और मूल्यों पर गर्व करे। वे स्वभाव से भावुक व कल्पनाशील थे परन्तु वातावरण तथा संस्कार ने राष्ट्रीयता का स्वरूप ले लिया। वास्तव में दिनकर जी ने अपनी कविता जो जनजागरण का हथियार बनाया। उनकी रचनायें आम जनमानस के मष्तिष्क पर आघात करती हैं। उनको झकझोरती हैं। उन्हें जगाने का प्रयास करती हैं।

भारत के अधिकांश लोग सदियों की गुलामी से पीड़ित थे। उनकी सुप्त चेतना को झकझोर कर जगाना जरूरी था। दिनकर जी का काव्य इन्हीं कारणों से जनजागरण का काव्य माना जाता है। युग कवि दिनकर जी ने राष्ट्रीय जनजागरण के लिए रक्त क्रान्ति के लिए गीत भी लिखा। वे लिखते हैं कि:-

गत विभूति भावों की आशा ले, युग धर्म पुकार उठे।

सिंहों की धन अंध में जागृति की हुँकार उठे।।

दिनकर जी ओज, शौर्य, हुंकार एवं उत्तेजना लाने वाले कवि के रूप में जाने जाते हैं। वे परशुराम की प्रतीक्षा में लिखते हैं कि -

गरजो, अंबर को भरों रणोच्चार से

क्रोधान्ध शेर होंकों से हंकारों से

यह आग मात्र सीमा की नहीं लपट है

मूढो स्वतंत्रता पर ही संकट है।

दिनकर जी महात्मा बुद्ध, महावीर के ज्ञान एवं शान्ति को तो स्वीकार करते हैं वे उनके माध्यम से भारतीय जनजागरण का महामंत्र भी फूकते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण प्रिय लगते हैं। वे भारतीय समाज में उनके खोये हुए विश्वास को पुनः लौटाना चाहते थे। दिनकर जी भारत माँ के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए भारतीय जनों को प्रेरित करते हैं। वे परशुराम की प्रतीक्षा में लिखते हैं कि -

सामने देश माता का भव्य चरण है

जिह्वा पर जलता हुआ एक बस प्रण है

काटेंगे अरि का मुंड कि स्वयं कटेंगे

पीछे परन्तु सीमा से नहीं हटेंगे ।।

राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीयता की भावना दिलो दिमाग से उपजती है। जिस भी व्यक्ति में अपने देश की मिट्टी अपनी सनातन संस्कृति धर्म एवं अपनी मातृभूमि से प्रेम होगा वह देश का केवल भौगोलिक इकाई नहीं मानेगा। इसे अपना धर्म, राष्ट्र धर्म दिखाई देगा।

आजादी के दिवाने राष्ट्र नायकों ने जिस तरीके से अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया था। वह हजारों हजारों वर्ष की गुलामी के जंजीर को तोड़ने का सद्प्रयास था। राष्ट्र कवियों ने चिंतकों ने अपनी स्वाभाविक चिन्ता को अपनी कविता में राष्ट्रोत्थान राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को किसी न किसी रूप में उद्घाटित किया है।

दिनकर जी के काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं के तीन सोपान आते हैं। प्रथम सोपान के अन्तर्गत दिनकर जी की वे कवितायें आती हैं जिनमें तीव्र देश प्रेम भावना व्यक्त की गयी है जो अतीत के जीवन मूल्यों के प्रति आस्था के माध्यम से व्यक्त किया गया है। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी के अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताओं में राष्ट्रीय भावना का भाव बोध प्रगट हुआ है। तीसरे सोपान के अन्तर्गत वे सभी रचनायें आती हैं

जिसमें देश प्रेम की भावना उतनी तीव्र और स्थाई नहीं है जितनी की सामयिक प्रेरणा दिल्ली नीम के पत्ते, हुंकार में जो कविताएँ हैं उसमें आती है।

दिनकर जी के मानस के मानवतावाद कूट में बारे के आदमी आम वे थे। पक्षधर के मानवतावाद प्रगतिवादी वे थे। हुआ भरा कूटकर-
थी। चिन्ता स्वाभाविक में मन उनके प्रति के जनों उपेक्षित एवं पीड़ित शोषितों गरीबों वहीं उनकी रचनाओं में दिखाई पड़ता है। वे लिखते हैं कि -

दहक रही मिट्टी स्वदेश की खौल रहा गंगा का पानी।

प्राचीरों में गरज रही है जंजीरों में कसी जवानी ।।

अर्पित करो समिध आओ हे समता के अभिमानी

इस कुण्ड से निकलेगी भारत की लाल भवानी ।।

राष्ट्रकवि दिनकर जी की राष्ट्रीयता भाववादी है जिसमें चिंतन के साथ ही साथ आक्रोश भी है। अंग्रेजी राज्य के खिलाफ प्रबल विरोध इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। दिनकर जी के काव्य में राष्ट्रीय चिंतन के साथ ही साथ सांस्कृतिक धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक राष्ट्रोत्थान की भी चिन्ता स्वाभाविक रूप से देखने को मिलती है। दिनकर जी की रचनाओं में क्रान्ति का उद्घोष है। जनमानस के प्रति हुंकार है प्रतिकार है विरोध है वे शोषक वर्ग के खिलाफ काव्य क्रान्ति कर रहे हैं। राष्ट्र कवि दिनकर जी मैथिलीशरण गुप्त एवं माखन लाल चतुर्वेदी की तरह राष्ट्रवादिता के कवि थे। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता के बोध के साथ ही साथ मानवीय मूल्यों के प्रति स्वाभाविक चिन्ता भी है। जिस तरह से निराला ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने स्वयं संत कवि कबीर ने जनजागरण का वृहद अभियान चलाया था जिसे लोक जागरण जनजागरण कहा गया। ठीक उसी तरह से राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत होकर कवि रामधारी सिंह दिनकर जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को जगाने का काम किया था।

डॉ ने गुप्त प्रसाद देवी .दिनकर जी के बारे में लिखा है कि “कवि श्री दिनकर जी की काव्य साधना का समारंभ स्वाधीनता संग्राम की बेला में हुआ जब जनमानस उत्कृष्ट भावनाओं से प्रेरित था। उस समय स्वतंत्रता की बलि बेदी सर्वरूप समर्पण करने की होड़ मची हुई थी। क्रान्ति की ज्वाला चारों तरफ फैली हुई थी। आम जनता बगावत कर चुकी थी। विप्लव विरोध विध्वंस क्रान्ति को लोग जन जागरण का हथियार बना चुके थे। ऐसी विध्वंसात्मक स्थिति में युवा कवि दिनकर जी ने राष्ट्रीय जनजागरण को अपना लक्ष्य बनाया।”

राष्ट्र कवि दिनकर जी की रचनाएँ आग उगलती थी। स्वदेश प्रेम राष्ट्र प्रेम की भावना से प्रज्वलित ओत प्रोत इनकी रचनाओं से जन मन में राष्ट्र प्रेम की ज्वाला धधक उठी। वैसे दिनकर जी महात्मा गांधी जी से अवश्य प्रभावित थे। फिर भी वे परशुरामवंशीय थे। ब्रम्हर्षि समाज के सुचिंतक थे। उनका मानना है कि दुष्ट मलेच्छ पापी पामर विदेशी ये हमारे कभी भी अपने नहीं हो सकते। वे उन लोगों को विधर्मो मलेच्छ मानते हैं। जैसे परशुराम जी ने दुष्टों का संहार किया था। वैसे ही आम जनता को इस हेतु खड़ा होना होगा। वे लिखते हैं कि -

दासत्व जहाँ वहीं स्तब्ध जीवन है

स्वातंत्र्य निरन्तर समर सनातन रण है

स्वतंत्रता समस्या नहीं आज या कल की

जगृति तीव्र वह घड़ी पलकी पल-

तिलक चढ़ा मत और हृदय को दूक दो

दे सकते हो तो गोली बंदूक दो ।।

रामधारी सिंह दिनकर जी प्रगतिवादी एवं स्वच्छतावादी कवि थे। वे रूढ़ियों पर प्रहार करना जानते थे। वे विषमता, शोषण एवं अराजकता के प्रबल विरोधी थे। वे कायर नपुंसक एवं देश विरोधी गद्दारों को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि -

अब समझा चुप्पी कायरता की वाणी है

बहुत अधिक चातुर्य आपदाओं का घर है

दोषी केवल वहीं नहीं जो नयन हीन था

उसका भी है पाप आँख थी किन्तु जो

बड़ी। है रहा तटस्थ मौन में घड़ियों डी

कवि दिनकर जी की रचनाओं में ओज है, विद्रोह है, हुंकार है व गुलामी की पीड़ा से पीड़ित भारतवासियों के दिलों दिमाग में स्वतंत्रता की आग जला रहे थे। जिसकी ज्योति घर- कि हैं लिखते में रेणुका वे । थी लगी जलने में घर-

दो आदेश फूँक दूगी उठे प्रभाती राग महान

तीनों काल ध्वनित हो स्वर में जागे सुप्त भुवन के प्राण

गत विभूति भावी की आषा ले युगधर्म पुकार उठे

सिंहों की धनं अंध गुहा में जागृत की हुंकार उठे ।

राष्ट्र कवि दिनकर जी ने शोषित पीड़ित उपेक्षित जन की पुकार बन कर क्रान्ति की मशाल लिए आगे बढ़े थे। जिसमें किसान क्रान्तिकारी युवक एवं आम भारती जन ने जुड़कर स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। निःसंदेह कवि दिनकर जी की रचनाएँ आग उगलने का काम किया जिससे भारतीय जनमानस जागृत हुआ।

रामधारी सिंह 'दिनकर जी' आधुनिक हिंदी साहित्य के उन महान कवियों में आते हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रभावना, शिक्षा, संस्कृति, नैतिकता और जन-जागरण को नई दिशा दी। स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखने वाले कवियों में दिनकर जी का स्थान विशेष है, क्योंकि उनकी कविताओं में शिक्षा को केवल पढ़ाई का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण, चरित्र-निर्माण और सामाजिक जागरण का साधन माना गया।

दिनकर जी की रचनाओं द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा की भावना के विकास को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है—

1. शिक्षा को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ना: दिनकर जी ने शिक्षा को ऐसे माध्यम के रूप में देखा जो व्यक्ति में राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व, देशभक्ति, समाज के प्रति कर्तव्य जगाती है। उनकी पंक्तियाँ जनमानस को प्रेरित करती हैं कि शिक्षित व्यक्ति केवल नौकरी तक सीमित न रहे, बल्कि देश और समाज के उत्थान में योगदान दे।
2. गुलामी और अज्ञान के विरुद्ध संघर्ष: दिनकर जी शिक्षा को स्वतंत्रता और स्वाभिमान की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। उनकी कविताएँ बताती हैं कि अज्ञान गुलामी लाता है, ज्ञान मनुष्य और राष्ट्र को स्वावलंबी बनाता है इस प्रकार उन्होंने शिक्षा को राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष से जोड़ा।
3. शिक्षा का उद्देश्य—चरित्र निर्माण: दिनकर जी की नजर में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं बल्कि— नैतिकता, साहस, आत्मबल, संकल्प, सामाजिकता का विकास करती है। उन्होंने कहा कि जब शिक्षा चरित्र बनाती है तो वही राष्ट्र की शक्ति बनकर उभरती है।
4. युवा शक्ति को शिक्षित और जागरूक करने की प्रेरणा: उनकी कविताएँ युवाओं को यह संदेश देती हैं कि— पढ़ा-लिखा युवा केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य के निर्माण का वाहक है। इसलिए शिक्षा का अंतिम लक्ष्य “व्यक्ति नहीं, समाज और राष्ट्र का विकास” होना चाहिए। उनकी रचनाएँ सीधे युवाओं को सक्रिय, संवेदनशील और रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती हैं।
5. भारतीयता और सांस्कृतिक चेतना का विकास: दिनकर जी ने शिक्षा में भारतीय संस्कृति, मूल्यों, इतिहास और गौरव की समझ को आवश्यक माना। उनकी कविताएँ शिक्षार्थियों को यह अहसास कराती हैं कि— अपनी जड़ों से जुड़े बिना, विदेशी विचारों की नकल भर से वास्तविक शिक्षा संभव नहीं।
6. सामाजिक समानता का संदेश: दिनकर जी शिक्षा को समाज में भेदभाव मिटाने, समान अवसर देने, कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने का हथियार मानते थे। उनकी रचनाएँ किसी भी प्रकार की सामाजिक असमानता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं।

उपसंहार

भारत में स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनैतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा शिक्षा के भारतीयकरण की प्रक्रिया से भी जुड़ा था। विदेशी शासन ने भारतीयों में पराधीनता की मानसिकता उत्पन्न की, जिसके विरुद्ध राष्ट्रीय नेताओं और चिंतकों ने ऐसी शिक्षा की मांग की जो राष्ट्रवाद, स्वाभिमान, स्वदेशी भावना और सामाजिक जागृति को जन-जन तक पहुँचा सके। रामधारी सिंह दिनकर जी की रचनाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा की भावना को— देशभक्ति, सामाजिक चेतना, चरित्र निर्माण, भारतीयता, समानता एवं सामूहिक उत्तरदायित्व के आधार पर मजबूत किया। उन्होंने साबित किया कि शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि **राष्ट्र निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति** है। इस प्रकार दिनकर जी की रचनाएँ आज भी शिक्षा को राष्ट्रीय दृष्टिकोण और मानव-धर्म से जोड़ने की प्रेरणा देती हैं।

कुल मिलाकर, हम कह सकते हैं कि रामधारी सिंह दिनकर जी की रचनाओं ने राष्ट्रीय मूल्य और राष्ट्रीय शिक्षा की भावना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी कविताओं में देशभक्ति, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय एकता का प्रबल संदेश है, जिससे भारतीयों में आत्मविश्वास और राष्ट्रीय चेतना जगी। दिनकर जी ने अपनी ओजस्वी और वीर रस की कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और बाद में भी समाज को जागरूक और प्रेरित किया।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. भट्टाचार्य, एस. (2016). भारत में शिक्षा और एक राष्ट्रवादी आंदोलन का निर्माण.
2. शर्मा, आर.एस. (2024). भारत में शिक्षा और राष्ट्रीय एकता: एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण.
3. रेन्स, जे.सी., और एगुइलर, एम.आई. (सं.) (2021). गांधी और धार्मिक विविधता की चुनौती: धार्मिक बहुलवाद पर पुनर्विचार.
4. करात, पी. (2017). भारतीय वामपंथी नेता: एक बौद्धिक जीवनी.
5. चोडोरो, एन., और जानी, पी. (सं.) (2018) भारत में महिला शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी।
6. यादव, आर.एस. (सं.) (2019). टैगोर और गांधी: विचारों का संगम.
7. कुमार, के. (2023). भारत में शिक्षा और राजनीति: संगठन, समाज और नेतृत्व का अध्ययन.
8. सिन्हा, आर.के. (2012). गांधी के शैक्षिक विचार: एक तुलनात्मक विश्लेषण.
9. मुखर्जी, एस. (2022). भारतीय महिलाएँ और राष्ट्रीय आंदोलन: 1885-1947.
10. देसाई, एन., और उबेरॉय, पी. (2024). शिक्षा और सशक्तिकरण: भारत में स्वतंत्रता संग्राम में महिला शिक्षा की आवश्यक भूमिका.
11. लेब्रा, जे. (2022). भारतीय राष्ट्रवाद और प्रारंभिक कांग्रेस.
12. केलकर, जी., और स्टीन, बी. (सं.) (2022). भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की बौद्धिक जड़ें.
13. भट्ट, एस.एस. (2021). गांधी का शैक्षिक दर्शन.
14. डॉ.अमित कुमार जायसवाल ., महात्मा गांधी के अहिंसा और कर्म योग के माध्यम से प्रेम का साकार होना , अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन और संगोष्ठी पत्रिका खंड :11 अंक 1 (2020): जनवरीमार्च-
15. सोमा चक्रवर्ती, भारत में पर्यावरण न्यायशास्त्र के विकास पर राष्ट्रीय हरित अधिकरण के प्रभाव का आकलन , अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन और संगोष्ठी पत्रिका खंड :14 अंक 1 (2023): खंड 14 | अंक 1 | जनवरी मार्च -2023
16. श्रीमती मीनाक्षी, गांधी और महिला उत्थान , अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन एवं संगोष्ठी पत्रिका खंड :7 अंक 5 (2016): जुलाई सितंबर -2016
17. बीएल गर्ग, बौद्धिक संपदा कानूनों का अध्ययन और भारत में बौद्धिक संपदा कानूनों में हालिया विकास , अंतर्राष्ट्रीय जर्नल फॉर रिसर्च पब्लिकेशन एंड सेमिनार खंड :7 अंक 7 (2016): जुलाई सितंबर -2016
18. अविनाश गौड़, कानूनी निर्णय लेने में एआई के नैतिक निहितार्थों की खोज , अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन और संगोष्ठी पत्रिका खंड :13 अंक 5 (2022): खंड 13 | अंक 5 | अक्टूबर दिसंबर -2022
19. श्रीमती अनुराधा, डॉ.अनिल कुमार तेवतिया ., भारत में शिक्षा प्रणाली का अध्ययन और भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 , अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रकाशन और संगोष्ठी पत्रिका खंड :7 अंक 2 (2016): अप्रैल जून -2016.

... Cite this article ...

प्रो. छत्रसाल सिंह. (2025). राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में रामधारी सिंह दिनकर के काव्य रचनाओं की भूमिका. SK INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH HUB, 12(11), 9–17. <https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i11.2>